भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(10), अक्टूबर 2026, पृ. 1031-1042
DOI: 10.56042/ijtk.v25i10.26551

भारत में स्वदेशी ज्ञान: वित्तपोषण प्रदाताओं द्वारा समर्थित अकादमिक शोध विषयों का एक ग्रंथ सूचीमिति विश्लेषण

अबिनाश कुमार बेहेरा* एवं सुप्रभा साहु
वाणिज्य विभाग,रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, वाणिज्य विभाग, कटक, ओडिशा 753 003, भारत।
*ई-मेल: abinash@ravenshawuniversity.ac.in

प्राप्त 17 जनवरी 2026; संशोधित 30 अप्रैल 2026; स्वीकृत 14 सितम्बर 2026

यह अध्ययन ग्रंथ सूचीमितीय तकनीकों के माध्यम से भारत में स्वदेशी ज्ञान से संबंधित वित्तपोषित शैक्षणिक शोध के परिवर्तनकाल, विस्तार और संरचना का विश्लेषण करता है। अध्ययन में 1997 से 2025 तक स्कोपस डेटाबेस से "Indigenous Knowledge", "Traditional Knowledge" और "Local Knowledge" शब्दों (कीवर्ड) का उपयोग करके प्राप्त आंकड़ों के आधार पर तीन-क्षेत्रीय आलेख (थ्री-फील्ड प्लॉट), कीवर्ड सह-उपस्थिति, विषयगत केंद्र, समय के साथ जर्नल प्रकाशन, प्रमुख संस्थानों एवं संबद्धताओं तथा संस्थागत सहयोग का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण एवं दृश्यांकन के लिए Biblioshiny (R पैकेज) का उपयोग किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि पर्यावरण संबंधी पारंपरिक ज्ञान, जल वायु परिवर्तन के अनुकूलन, जैव विविधता संरक्षण, एथ्नोबॉटनी तथा औषधीय पौधों के संदर्भ में स्वदेशी ज्ञान के प्रतिरुचि लगातार बढ़ रही है। अध्ययन यह दर्शाता है कि शोध का केंद्र एथ्नोमेडिसिनल एवं वनस्पति संबंधी दस्तावेजीकरण से आगे बढ़कर अनुप्रयुक्त अंतर्विषयक मुद्दों, सततता, मशीन लर्निंग और डिजिटल दस्तावेजीकरण की ओर विस्तार हो रहा है। अध्ययन में प्राप्त परिणामों का प्रासंगिक संदर्भों के साथ आलोचनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। यह मौजूदा साहित्य में शोध-अंतरालों की पहचान करता है और भविष्य के शोध की दिशाएँ सुझाता है, जो स्वदेशी ज्ञान को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ती हैं तथा नीति निर्माण का मार्ग दर्शन करती हैं।

मुख्य शब्द: ग्रंथ सूचीमिति, वित्तपोषण प्रायोजक, भारत, स्वदेशी ज्ञान, शोध विषय, स्कोपस डेटाबेस